eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

लोक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता

डॉ० सुशील कुमार यादव[1]
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर सैन्य अध्ययन विभाग, के०जी०के० पी०जी० कालेज, मुरादाबाद (उ०,प्र०)

Received: 05 April 2025, Accepted: 20 April 2025, Published online: 01 May 2025

Abstract

हमारा देश भारत लोक संस्कृतियों से समृद्ध देश है। यहाँ अलग–अलग लोक संस्कृतियों के लोग रहते हैं। लोक संस्कृति सब कुछ है क्यों कि यह भारत की राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाये रखने में बहुत महत्वपूर्ण होती है। लोक संस्कृति, राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने में और उसे बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाती है। लोक संस्कृति वहाँ के समाज की पहचान और एकता को दर्शाती है। ऐसा इसलिए भी क्यों कि लोक संस्कृति के द्वारा विभिन्न समुदायों के बीच आपसी संबंध और सहयोग बहुत बढ़ाता है। राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में लोक संस्कृति की भूमिका निर्विवाद रूप से अतिमहत्वपूर्ण है। भारत की लोक संस्कृति की एक अलग ही पहचान है। भारत में अनेक धर्म, जाति, भाषा, रहन–सहन व लोक संस्कृति के लोग एक साथ मिल–जुलकर रहते हैं। अनेकता में एकता भारत की विशेषता की पहचान है। लोक संस्कृति मनुष्य की जीवनी शक्ति और राष्ट्र के वैभव को बढ़ाने की भावना से युक्त होती है। इससे राष्ट्रीय एकता की सुदृढ़ भावना साकार होती है। लोक संस्कृति राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण बनाये रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बीज शब्द– लोक संस्कृति, समुदायों, रीति–रिवाज, टोने–टोटके, व्रत–त्यौहार, और, हैं, परम्पराएं, बुजुर्गों, राष्ट्र प्रेम, एकता आदि।

Introduction

मानव इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब कभी राष्ट्र और समाज में अनेकता का जन्म हुआ है तब देश की राष्ट्रीय एकता का परिवेश खोखला द्वष्टिगोचर हुआ है। इतिहास भी इसका प्रमाण प्रस्तुत करता है कि भारत इसलिए पराधीन हुआ कि भारतीय समाज में अर्थात जनता में आपसी एकता समाप्त हो चुकी थी। लोक संस्कृति के प्रति जब भारतीय समाज ने गहराई से ध्यान दिया तो उन्हें अपनी पराधीनता की उत्पन्न हुई स्थिति का अनुमान हो गया। इसके पश्चात् सभी भारतीय आपसी सूझबूझ के साथ लोक संस्कृति के प्रति गम्भीर हुए। देखते ही देखते लोक संस्कृति की मजबूती राष्ट्रीय एकता के रूप में आगे बढ़ी और रंग लाई और गुलाम भारत स्वतंत्र हो गया। लोक संस्कृति वह महत्वपूर्ण तत्व है जो लोगों को राष्ट्रीय एकता के प्रति शक्ति और साहस का संचार करती है। लोक संस्कृति में राष्ट्रीय एकता की भावना व राष्ट्र प्रेम परिलक्षित होता है। कहा भी गया है कि हिन्द देश के निवासी, सभी जन एक हैं, रंग–रूप वेश भाषा चाहे अनेक हैं। भारतीय लोक संस्कृति में विविध प्रकार के लोग निवास करते हैं, फिर भी हमें उन सभी में राष्ट्रीय एकता की भावना समान रूप से भरा हुआ दिखाई देता है। इसीलिए भारतीय लोक संस्कृति में राष्ट्रीय एकता का महत्वपूर्ण स्थान सदैव से रहा है। हमारे वेदों में भी राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय प्रेम का वर्णन मिलता है।

लोक संस्कृति लोक के परम्परागत जीवन मूल्यों का वह दर्पण है जिसमें लोक मानस प्रतिबिम्बित होता है। इसका मतलब किसी समाज की परम्परागत मान्यताएं, रीत–रिवाज और जीवन जीने का तरीका

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

आदि। लोक संस्कृति में मानव जीवन के विभिन्न आयाम समाहित रहते हैं। यह समाज के सोचने, विचारने, रहन–सहन, व्यवहार और कार्य करने के तरीके में दिखता है। लोक संस्कृति में रीति–रिवाज, खान–पान, वेशभूषा व्रत–त्योहार, धार्मिक विश्वास, लोक–प्रचलित मान्यताएं, टोने–टोटके आदि का समावेश रहता है। लोक संस्कृति का प्रभाव राष्ट्रीय एकता और अखण्डता पर गहराई से पड़ता है। लोक संस्कृति विभिन्नता में एकता का अनूठा संगम प्रस्तुत करती है। प्रत्येक राज्य, देश की लोक संस्कृति की एक अलग पहचान होती है।

विश्व में भारत एक विशाल एवं विविधताओं से भरा देश है। ऐसा इसलिए भी क्यों कि यहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों के लोग एक साथ रहते हैं। हमारी लोक संस्कृति प्राचीन काल से ही चली आ रही है। लोक संस्कृति हमारी राष्ट्रीय एकता का बहुत महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ है। लोक संस्कृति और राष्ट्रीय एकता का सम्बन्ध बहुत गहरा होता है। सांस्कृतिक आदान–प्रदान, लोक संस्कृति के विभिन्न रूप, प्रचलित लोक गीत, लोकनृत्य, प्रचलित लोक कलाये, प्रचलित त्यौहार आदि एक–दूसरे को और एक–दूसरे की संस्कृतियों को समझने–बूझने का और उनका सम्मान करने का बेहतर अवसर प्रदान करते हैं। इस तरह की सांस्कृतिक आदान–प्रदान करते रहने से राष्ट्रीय एकता को मजबूती मिलती है और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाये रखने का बढ़ावा भी मिलता है। देश की लोक संस्कृति में कई समान मूल्य एवं मान्यताएँ विद्यमान होती हैं जैसे कि परिवार का महत्व, घर के बुजुर्गों का मान सम्मान, लाज–लिहाज, अदब आदि और साथ ही साथ प्रकृति के प्रति श्रद्धा भावना ये सभी कीमती तत्व हमें एक सूत्र में बाँधते हैं तथा राष्ट्रीय एकता को मजबूत करते हैं, ठोस बनाते हैं।

लोक संस्कृति के तहत जनता की या आम लोगों की जो संस्कृति है वह राष्ट्र की राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में और उसे सुदृढ़ बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। ऐसा इसलिए क्यों कि यह विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों और अनेकों प्रकार के समुदायों के बीच साझा मूल्यों, भिन्न–भिन्न प्रकार की परम्पराओं और कला आदि को बहुत बढ़ावा प्रदान करती है। इन सभी विशेषताओं के कारण ही देश में राष्ट्रीय एकता और समझ विकसित होती है। लोक संस्कृति से राष्ट्रीय एकता की भावनाओं का विकास होता है। लोक संस्कृति के द्वारा जैसे कि आम जनता के बीच प्रचलित लोकगीत, तरह–तरह के लोक नृत्य, विविध प्रकार की लोक कथाएं तथा लोक कलाएं आदि राष्ट्र के लोगों को एक मजबूत साझा पहचान प्रदान करती हैं। इन्हीं सब से आम लोग एक–दूसरे से आपस में जुड़ते हैं और उनके ह्रद यमन में राष्ट्रीय भावना विकसित होती है जो कि राष्ट्रीय भावना को मजबूत करती है। हमारा देश भारत बहुत विशाल देश है, जो कि विविधताओं वाला देश है। यहाँ विभिन्न प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं, अनेकों प्रकार के धर्म प्रचलित हैं, उनकी अपनी संस्कृति है। परन्तु लोक संस्कृति इन सभी अनेकों प्रकार की विविधताओं के बीच एकता के सूत्र को बनाये रखती है जिससे राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास होता है। इसीलिए लोक संस्कृति राष्ट्रीय एकता के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। अनेकता में एकता हमारे देश भारत की एक विशेषता है। हमारा भारत एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न प्रकार के जाति, धर्म, भाषा एवं संस्कृति के लोग मिलजुल कर अच्छी तरह से रहते हैं। भारत की संस्कृति एवं परम्परा राष्ट्रीय एकता और अखंडता का आधार है। ऐसा इसलिए भी क्यों कि किसी देश की एकता ही उस देश के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लोक संस्कृति किसी भी देश की राष्ट्रीय एकता को बल प्रदान करती है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

लोक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता आम लोगों की जीवनी शक्ति और राष्ट्र के वैभव को बढ़ाने की भावना से युक्त होती है। यदि किसी कारणवश या वह कालचक्रवश घटने की परिस्थिति में आ जाता है और वहाँ तक आ पहुँचे कि सब कुछ खण्डहर हो जाये फिर भी राष्ट्र का वैभव अपने खण्डहर में बोलता रहता है, और विगत वैभव को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहता है।[1] लोक संस्कृति में राष्ट्रीय एकता की भावना का समावेश होता है। भारतीय लोक संस्कृति में अनेक देशी–विदेशी संस्कृतियों का एक तरह से संगम है। हमारे देश भारत में ज्ञान तथा धन के लोभी विदेशियों का यहाँ आना हुआ और यहाँ के रंग–ढंग में वे ढल भी गये। अंग्रेजों का जब भारत में शासनकाल था तब हिन्दू–मुस्लिम लोक संस्कृतियाँ आपस में विधिवत घुल–मिल गई। परन्तु असामाजिक तत्वों के दुष्प्रभाव और राजनीतिक कुचक्र आदि के कारण देश में हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे और एक–दूसरे को लोग मारने काटने लगे। इस प्रकार देश के आम लोगों का आपसी भाई–चारा की भांवना विलुप्त होने लगी। तब राष्ट्रीय भावना को साकार करने के लिए और उस राष्ट्रीय भावना को बनाये रखने के लिए लोक संस्कृति के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की भावना को जागृत किया जाने लगा। इसके पश्चात् देश में हिन्दु–मुस्लिम भाई–चारे की भावना का विकास लोक संस्कृति के माध्यम से पुनः करने का सफल प्रयास किया गया।

लोक संस्कृति के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की भावना को बानाये रखने के लिए सभी लोगों, समूहों, जातियों, धर्मों के आम लोगों को प्रयास करना ही होगा। हमें लोक संस्कृति के माध्यम से वह संस्कार अपने भीतर जगाना ही होगा, जिससे सिन्धु तट पर होने वाले आक्रमण की बात सुनकर काशी का नागरिक कह उठे कि मेरे देश पर आक्रमण हुआ। जब तक देश अथवा राष्ट्र की यह भावना हमारे अन्दर उत्पन्न नहीं होती है, तब तक हमारा कल्याण नहीं है। ऋग्वेद कहता है कि मानव जाति एक ही है।'' एकैव मानुषी जातिः।'' और सब मनुष्य भाई हैं। ''भ्रातरो मानवाः सर्वे।''[2] लोक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता के तहत सांस्कृतिक विरासत का भी बहुत योगदान होता है। किसी भी देश, राज्य की लोक संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत का अतिमहत्वपूर्ण हिस्सा होता है। यह उस समाज के लोगों को जड़ों से जोड़ती है, और उन्हें उनकी पहचान का बोध कराती है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि अपनी लोक संस्कृति के तहत अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ाता है। सामुदायिकता की भावना लोक संस्कृति और राष्ट्रीय एकता को बल प्रदान करता है। लोक संस्कृति विविध रूपों में जैसे कि– लोक नृत्य और लोक त्योहार सामूहिक रूप से मनाये जाते है। सामुदायिकता की भावना को सामूहिक भागीदारी से बढ़ावा मिलता है और यह राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाती है। भारत की लोक संस्कृति भारत की राष्ट्रीय एकता के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

लोक संस्कृति से मिली परंपराएं और मूल्य राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ाते हैं। लोक संस्कृति राष्ट्रीय एकता को बल प्रदान करती है। अनेकता में एकता भारत की प्रमुख विशेषता है। हमारे देश में विभिन्न जाति, धर्म, भाषा एवं संस्कृति के लोग मिलजुलकर रहते हैं। भारत की लोक संस्कति भारतीय एकता का आधार है। सर्वे भवंतु सुखिनाः, सर्वे संतु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःख भागभवेत। ऐसा सर्वोच्च विचार सम्पन्न आर्य ऋषि ने समग्र मानव समाज के लिए उसके कल्याण के लिए प्रार्थना किया था। परम पूज्य आदि गुरु शंकराचार्य ने श्रृंगेरी, पुरी, द्वारिका व बद्रीनाथ में चार दिशाओं में चार मठ की स्थापना कर समूचे देश को एक सूत्र में बांधने का हरसम्भव प्रयास किया था। स्वामी विवेकानन्द जी ''वसुधैव कुटुंबकम'' मंत्र समूचे विश्व को प्रदान कर विश्व विजयी हो गये थे। किसी

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

देश की लोक संस्कृति उस देश की राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाये रखने में बहुत सहायक होती है। भारतीय लोक संस्कृति भारत की राष्ट्रीय एकता को ताकत और स्थिरता प्रदान करती है।

लोक संस्कृति से राष्ट्र की राष्ट्रीय एकता सदैव से प्रभावित होती रही है। लोक संस्कृति, राष्ट्रीय एकता की धरोहर है। लोक संस्कृति संविधान, क्षेत्रीय निरंतरता, आम आर्थिक जरुरते, कला, साहित्य, राष्ट्रीय त्योहार, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय प्रतीक आदि राष्ट्रीय एकता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। भारत में राष्ट्रीय एकता दिवस प्रत्येक वर्ष 31 अक्टूबर को मनाया जाता है। यह दिन सरदार बल्लभ भाई पटेल जिन्हें लौह पुरुष के रूप में भी जाना जाता है की जयन्ती को प्रतिबिम्बत करता है। राष्ट्रीय एकता के निर्माण में लोक संस्कृति की बेहद अहम भूमिका होती है। लोक संस्कृति देश की पहचान और सामाजिक एकता का प्रतीक है जिससे राष्ट्रीय एकता प्रबल होती है। लोक संस्कृति के माध्यम से विभिन्न समुदायों के बीच आपसी सम्बन्ध और सहयोग बढ़ता है, जो राष्ट्रीय एकता के निर्माण में सहायक होता है। यही नहीं इसके अतिरिक्त लोक संस्कृति से मूल्य और परम्पराएं प्राप्त होती है जो राष्ट्रीय एकता की भावनाओं को प्रबल करती हैं।

इस तरह लोक संस्कृति राष्ट्रीय एकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राष्ट्रीय एकता की वजह से ही देश का सर्वांगीण विकास सम्भव होता है। लोक संस्कृति देश व राज्य की राष्ट्रीय एकता का अहम हिस्सा है। लोक संस्कृति से समाज की पहचान और उसकी राष्ट्रीय एकता की सबलता दिखाई पड़ती है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक लोक संस्कृति में विविध प्रकार की विविधताएं दृष्टिगोचर होती हैं जो राष्ट्रीय एकता को बहुत सबल बनाती हैं। देश के प्रति राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूती प्रदान करने में लोक संस्कृति बहुत अहम होती है।

निष्कर्ष– उपर्युक्त किये गये विवरणों का अध्ययन करने के पश्चात् निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि लोक संस्कृति राष्ट्रीय एकता का महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ है। लोक संस्कृति राष्ट्रीय एकता के निर्माण में उसे मजबूती प्रदान करने में अत्यंत आवश्यक हैं। लोक संस्कृति सांस्कृतिक विविधता में एकता को साझा मूल्यों तथा परम्पराओं को तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान को एवं राष्ट्रीय पहचान के निर्माण को बढ़ावा देती है। इसीलिए लोक संस्कृति राष्ट्रीय एकता के लिए वहुत आवश्यक है। लोक संस्कृति ही राष्ट्रीय एकता को बल प्रदान करती है। लोक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता राष्ट्र की शक्ति की प्राणवायु हैं, उसकी धमनियां है जो कि समाज में राष्ट्रीय एकता की भावना को जागृति करती हैं, उनमें राष्ट्रीय एकता के प्रति सकारात्मक सोच भरती हैं, जिससे राष्ट्रीय एकता की भावना प्रबल होती है। लोक संस्कृति राष्ट्रीय एकता की एक महत्वपूर्ण संपदा है। हमें अपनी लोक संस्कृति के मूल्यों को बहुत महत्व देना चाहिए। लोक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता एक ही सिक्के के दो पहलू के रूप में बहुत महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक भारतीय को यह समझना होगा तभी लोक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा और हमारे देश की एकता और अखण्डता बरकरार रह सकेगी। लोक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता के महत्व को किसी भी दशा में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

संदर्भ सूची–

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

1– आनन्द प्रकाश त्रिपाठी : अमृतलाल नागर के उपन्यास–पृष्ठ–294

2– आनन्द प्रकाश त्रिपाठी : अमृतलाल नागर के उपन्यास – पृष्ठ 295–294

3– कृष्ण देव उपाध्याय : लोक संस्कृति की रूपरेखा

4– अनिल कार्की : लोक संस्कृति के विविध आयाम

5– एल. एम. सिंघवी : भारत की राष्ट्रीय एकता

6– रामधारी सिंह दिनकर : राष्ट्र भाषा एवं एकता

7– डॉ० द्विजराम एवं डॉ० विजय कुमार : लोक साहित्य विमर्श

8– डॉ० सत्येंद्र : ब्रज लोक संस्कृति